बाइबल टीचर

वर्ष 16 | सितम्बर 2019 | अंक 10

सम्पादकीय

चर्च ऑफ क्राइस्ट कोई डिनोमिनेशन नहीं है

''इसलिए अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिसमें पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है। मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से ऐसे ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेढ़ी मेढ़ी बातें कहेंगे'' (प्रेरितों 20:28-30)

रोम में जो मसीह की कलीसिया पाई जाती थी वहां पौलुस उन्हें लिखता है कि, ''अब हे भाईयो, मैं तुम से विनती करता हूं कि जो लोग उस शिक्षा के विपरीत जो तुमने पाई है, फूट डालने, और ठोकर खिलाने का कारण होते हैं, उन्हें ताड़ लिया करो; और उन से दूर रहो। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु मसीह की नहीं, परन्तु अपने पेट की सेवा करते हैं, और चिकनी चुपड़ी बातों से सीधे सादे मन के लोगों को बहका देते हैं। तुम्हारे आज्ञा मानने की चर्चा सब लोगों में फैल गई है, इसलिए मैं तुम्हारे विषय में आनन्द करता हूं; परन्तु मैं यह चाहता हूं, कि तुम भलाई के लिए बुद्धिमान, परन्तु बुराई के लिए भोले बने रहो। शांति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पांवों से शीघ्र कुचलवा देगा। हमारे प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह तुम पर होता रहे'' (रोमियों 16:17-20)

आज सारे विश्व में मसीह की कलीसिया पाई जाती है। पौलुस रोम में कलीसिया को लिखकर कहता है, ''तुम को मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार'' (रोमियों 16:16), ये सारी कलीसियाएं जिनके विषय में वह बात कर रहा है मसीह की कलीसियाएं थी, ये कोई डिनोमिनेशने नहीं थी। बात यह है कि उस समय में कोई डिनोमिनेशन या साम्प्रदायिक कलीसिया थी ही नहीं। हम बाइबल में पढ़ते हैं कि प्रत्येक स्थान पर जो मसीह की कलीसिया थी वह मसीह के नाम से जानी जाती थी। उस समय में न कैथोलिक थे और न प्रोटेस्टेंट थे। डिनोमिनेशन का अर्थ होता है बांटना। उदाहरण के लिए जैसे पांच सौ के एक

नोट को कई भागों में बांट देना। सौ का नोट, पचास का नोट, बीस का तथा दस का नोट यानि पांच सौ के नोट को कई हिस्सों में बांट दिया गया। कुरिन्थिुस में मसीह की मण्डली या कलीसिया में कुछ लोग डिनोमिनेशन बनाने का प्रयास कर रहे थे तब प्रेरित पौलुस ने उन्हें डांट लगाकर कहा, ''हे भाईयो, मैं तुम से यीशु मसीह जो हमारा प्रभु है उसके नाम के द्वारा बिनती करता हूं, कि तुम सब एक ही बात कहो; और एक ही मत होकर मिले रहो। क्योंकि हे मेरे भाइयो, खलोए के घराने के लोगों ने मुझे तुम्हारे विषय में बताया है, कि तुम में झगड़े हो रहे हैं। मेरा कहना यह है, कि तुम में से कोई तो अपने आप को पौलुस का, कोई अनुल्लोस का कोई कैफा का, कोई मसीह का कहता है। क्या मसीह बंट गया? क्या पौलुस तुम्हारे लिए क्रूस पर चढ़ाया गया? या तुम्हें पौलुस के नाम पर बपतिस्मा मिला?'' (1 कुरिन्थियों 1:10-13)।

कितने दुख की बात है कि उस समय में किस प्रकार से लोग मसीह को बांटने की कोशिश कर रहे थे। परन्तु एक समय ऐसा आया जब पौलुस ने कहा था कि जब हम प्रेरित मर जाएंगे तो हमारे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िये तुम्हारे बीच में आएंगे। इसके विषय में हम पढ़ते हैं जहां पौलुस मसीह की कलीसिया के ऐल्डरों से कहता है, ''इसलिए अपनी और पूरे झुंड की चौकसी करो; जिस में पवित्र आत्मा ने तुम्हें अध्यक्ष ठहराया है; कि तुम परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली करो, जिसे उसने अपने लोहू से मोल लिया है। मैं जानता हूं, कि मेरे जाने के बाद फाड़ने वाले भेड़िए तुम में आएंगे, जो झुंड को न छोड़ेंगे। तुम्हारे ही बीच में से भी ऐसे-ऐसे मनुष्य उठेंगे, जो चेलों को अपने पीछे खींच लेने को टेड़ी मेढ़ी बातें कहेंगे'' (प्रेरितों 20:28-30)। आज सारे संसार में कई हजार डिनोमिनेशनें पाई जाती है और इन सबके अपने अपने नाम तथा इनकी भिन्न-भिन्न शिक्षाएं हैं जिनके विषय में हम बाइबल में नहीं पढ़ते। मित्रो, यह एक वास्तविकता है जिनके विषय में आपको पता होना चाहिए और इतिहास इसका गवाह है।

बाइबल हमें बताती है कि प्रभु यीशु ने अपनी कलीसिया को बनाने का वायदा किया था (मत्ती 16:18) और इस कलीसिया की स्थापना यरूशलेम में हुई थी जब प्रेरित पतरस ने यीशु का प्रचार किया था उसका प्रचार सुनकर लगभग 3000 लोगों ने बपतिस्मा लिया था। और इसी दिन मसीह की कलीसिया की स्थापना हुई थी (प्रेरितों 2:38; 41 और 47)। इस कलीसिया का एक ही विश्वास, एक ही नाम, एक ही आराधना तथा एक ही उद्देश्य था। आज जितनी भी डिनोमिनेशनें संसार में हम देखते हैं यह सब मनुष्यों की थियोलॉजी तथा ज्ञान पर आधारित हैं।

मसीह की कलीसिया का सदस्य बनने के लिए बाइबल हमें बताती है कि हमें यीशु में विश्वास करना है, सारी बुराईयों से मन फिराना है, मुंह से यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानना यानी उसका अंगीकार करना है तथा पानी में गाड़े जाकर

बपतिस्मा लेना है। मसीह की कलीसिया की अपनी कोई धर्म की पुस्तक नहीं है जिसमें इसके नियम इत्यादि लिखे गए हो या इसका सदस्य बनने के बारे में बताया गया हो। आपको कोई फार्म नहीं भरना है और न ही किसी लीडर या प्रचारक की कोई परमीशन लेनी है।

इस कलीसिया में मुखिया केवल प्रभु यीशु को ही माना जाता है क्योंकि बाइबल बताती है कि वह कलीसिया का सिर है (कुलुस्सियों 1:18)। प्रत्येक व्यक्ति के लिए केवल बाइबल में से पढ़ा जाता तथा सिखाया जाता है।

मसीह की कलीसिया प्रत्येक रविवार को आराधना के लिए एकत्रित होती है तथा सदस्यों को प्रोत्साहित किया जाता है कि वे प्रत्येक रविवार को आराधना में आयें। हम प्रार्थनाएं करते हैं जिसमें केवल पुरुष सदस्य ही अगुआई करते हैं। गीतों तथा भजनों को बिना साजों के बड़ी सादगी से गाया जाता है। प्रचारक कलीसिया के लोगों को प्रोत्साहित करने के लिए वचन से प्रचार करता हैं तथा यीशु की मृत्यु को याद करने के लिये प्रभु भोज या सहभागिता प्रत्येक रविवार को होती है (प्रेरितों 20:7)। अखमीरी रोटी तथा अंगूर का रस इस्तेमाल किया जाता है तथा कलीसिया के लोग अपनी खुशी से अपनी आमदनी के अनुसार चंदा भी देते हैं और ये चंदा कलीसिया के कार्य के लिये इस्तमाल होता है। (प्रेरितों 2:42; 2 कुरिन्थियों 9.7; 1 कुरिन्थियों 16:1-2)। ये सारी बातें परमेश्वर के वचन के अनुसार हैं तथा बाइबल पर आधारित है क्योंकि एक दिन हमारा न्याय केवल बाइबल से होगा (यूहन्ना 12:48) उस समय अर्थात न्याय के दिन जब आप परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे तब आप क्या जवाब देंगे? (2 कुरिन्थियों 5:10)।

मसीह की कलीसिया में कोई मनुष्य हैड या बॉस नहीं है। केवल यीशु को चीफ पास्टर या चरवाहा यानी ऐल्डर मानकर उसके पीछे सारे लोग चलते है। मसीह की कलीसिया में कोई लीडर अपने आपको पास्टर, रैवरंड, बिशप, मोस्ट रैवरंड नहीं कहता। यीशु की उस बात को माना जाता है जो उसने कही थी कि ''तुम रब्बी न कहलाना, क्योंकि तुम्हारा एक ही गुरु है, और तुम सब भाई हो। पृथ्वी पर किसी को अपना पिता (यानी फादर) न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो स्वर्ग में है'' (मत्ती 23:8-9)। मसीह की कलीसिया में लोग एक दूसरे को भाई या बहन अर्थात ब्रदर तथा सिस्टर कहकर बुलाते हैं। एक और विशेष बात यह है कि मसीह की कलीसिया के अगुवे कोई विशेष लिबास नहीं पहनते या कहना चाहिए कि वे अपने को कलीसिया के अन्य लोगों से अलग नहीं दिखाते। यह असाम्प्रदायिक, नये नियम के अनुसार मसीह की कलीसिया है। अंग्रेजी में इसे चर्च ऑफ क्राइस्ट कहा जा सकता है और यह कोई डिनोमिनेशन नहीं है।

यदि मैं यीशु का प्रचार करूं

सनी डेविड

संसार में सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण काम जो कोई भी मनुष्य कर सकता है, वह है यीशु के सुसमाचार का प्रचार। क्योंकि यीशु का सुसमाचार हर एक मनुष्य के लिए उसके उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है। सांसारिक दृष्टिकोण से, कोई मनुष्य शायद बड़े-से-बड़ा कलाकार बन जाए, या वह कोई एक बहुत बड़ा आविष्कार कर ले। या हो सकता है, वह संसार में एक सबसे बड़ा धनी मनुष्य बन जाए, या सबसे अधिक बुद्धिमान हो जाए। परन्तु एक दिन अवश्य ही उसका सम्बंध इन सब कामों से छूट जाएगा। व्यक्तिगत रूप से, उसे इन में से किसी भी वस्तु के अन्त में कोई लाभ प्राप्त न होगा। या जैसा कि प्रभु यीशु ने इस बात का निचोड़ निकालकर कहा, कि "यदि मनुष्य सारे जगत को प्राप्त करे और अपने प्राण की हानि उठाए, तो उसे क्या लाभ होगा? और मनुष्य अपने प्राण के बदले क्या देगा?" (मरकुस 8:36, 37)। एक दिन अवश्य ही हमारे इस नाशमान संसार का अन्त हो जाएगा। तब मनुष्य के हर एक काम का अन्त होगा; हर एक वस्तु जो विद्यमान है, सदा के लिए अनन्तकाल में लोप हो जाएगी। बड़े ही संक्षिप्त रूप में उस दिन का वर्णन करके पवित्र शास्त्र यूं कहता है: "उस दिन आकाश बड़ी हडहड़ाहट के शब्द से जाता रहेगा, और तत्व बहुत ही तप्त होकर पिघल जाएंगे, और पृथ्वी और उस पर के सब काम जल जाएंगे।" (2 पतरस 3:10)।

परन्तु जबकि सम्पूर्ण सृष्टि का ऐसा बड़ा अन्त होने वाला है, मनुष्य जो कि परमेश्वर के स्वरूप वा समानता पर सृजा गया है, और इसलिये क्योंकि वह एक आत्मिक प्राणी है, अनन्तकाल तक बना रहेगा। हां, मनुष्य की देह अवश्य ही मिट्टी में मिल जाएगी, परन्तु आत्मिक दृष्टिकोण से वह सर्वदा अनन्तकाल तक बना रहेगा। वहां, उस अनन्तकाल में, केवल दो ही तरह के स्थान होंगे, जिनमें से किसी एक में प्रत्येक मनुष्य, या यू कहिए, कि आप और मैं, हमेशा हमेशा तक रहेंगे। उन दो स्थानों को स्वर्ग और नरक कहा जाता है। स्वर्ग वह जगह है, जहां परमेश्वर और अनन्त सुख है। और नरक वह स्थान है, जहां अंधकार और सदाकाल का रोना और पीड़ा और दांतों का पीसना है। स्वर्ग में केवल वही लोग होंगे, जिन्होंने परमेश्वर के उद्धार के मार्ग को स्वीकार किया है और उसके द्वारा स्वर्ग में प्रवेश पाया है। और परमेश्वर का वह मार्ग यीशु मसीह है। क्योंकि उसने कहा, "मार्ग और सच्चाई और जीवन में ही हूं; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता।" (यूहन्ना 14:6)। परन्तु, जिन्होंने परमेश्वर के उद्धार की योजना को स्वीकार नहीं किया है; और उसके पुत्र यीशु के

सुसमाचार की आज्ञाओं का, जो हमारे उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है, (रोमियों 1:16), पालन नहीं किया है, वे सब नरक में अनन्त विनाश के दण्ड के भागी होंगे। (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)।

सो इसीलिये, मैं ने आरंभ में कहा, कि संसार में सबसे बड़ा और महत्वपूर्ण काम जो कोई भी मनुष्य कर सकता है, वह है यीशु के सुसमाचार का प्रचार। इससे बड़ा काम संसार में और कोई नहीं है। क्योंकि यीशु का सुसमाचार एक ऐसी ताकत है, जो लोगों की आत्माओं को नाश होने से बचाता है, और स्वर्ग में अनन्त जीवन देता है।

परन्तु यदि मैं यीशु का प्रचार करूं, तो मुझे क्या प्रचार करना चाहिए? मुझे चाहिए, कि मैं आपको बताऊं, कि आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व यीशु का जन्म, परमेश्वर द्वारा की गई प्रतिज्ञाओं और भविष्यद्वाणियों के अनुसार, बैतलहम नाम के एक नगर में हुआ था। (उत्पत्ति 3:15 : यशायाह 7:14) जब उसका जन्म हुआ था, तो एक स्वर्गदूत ने प्रगट होकर यह ऐलान किया था कि "देखो मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूं जो सब लोगों के लिये होगा। कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।" (लूका 2:11)।

मुझे चाहिए, कि मैं आपको यीशु के आरंभ के दिनों के बारे में बताऊं, कि पवित्र शास्त्र कहता है, "और बालक बढ़ता, और बलवन्त होता, और बुद्धि से परिपूर्ण होता गया; और परमेश्वर का अनुग्रह उस पर था।" (लूका 2:4)।

फिर जब उसकी आयु लगभग तीस वर्ष की हुई तो वह यूहन्ना नाम के एक व्यक्ति के पास आया, और उस से यह कहकर बपतिस्मा लिया कि हमें इसी तरह से सब धार्मिकता को पूरा करना उचित है। और जब वह बपतिस्मा लेकर पानी में से ऊपर आया, तो उसके लिये आकाश खुल गया, और परमेश्वर की ओर से यह आकाशवाणी हुई "कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं अत्यंत प्रसन्न हूं।" (मत्ती 3:13-17)।

और तब, उस समय आत्मा यीशु को जंगल में ले गया ताकि शैतान से उसकी परीक्षा हो। वह चालीस दिन और चालीस रात, निराहार रहा, अन्त में उसे भूख लगी। तब परखने वाले ने पास आकर उस से कहा, यदि तू परमेश्वर का पुत्र है, तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जाएं। "उसने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।" (मत्ती 4:1-4)।

फिर, यदि मैं यीशु का प्रचार करूं, तो मुझे चाहिए कि मैं उसकी उन अद्भूत और प्रभावशाली शिक्षाओं को आपको बताऊं जिन्हें सुनने के लिये लोगों की भीड़ की भीड़ उसके पास इकट्ठा हो जाती थी, और वे उसके उपदेश सुनकर चकित होकर कहते थे कि यह एक अधिकारी की नाई उपदेश देता है। (मत्ती

7:28, 29)। उसने कहा, "अन्य है वे, जो मन के दीन हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है ....धन्य है वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे।" (मत्ती 5:3, 6)। "सावधान रहो। तुम मनुष्यों को दिखाने के लिये अपने धर्म के काम न करो, नहीं तो अपने स्वर्गीय पिता से कुछ भी फल न पाओगे।" (मत्ती 6:1)। "अपने लिये पृथ्वी पर धन इकट्ठा न करो; जहां कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं, और जहां चोर सेंध लगाते और चुराते हैं। परन्तु अपने लिये स्वर्ग में धन इकट्ठा करो, जहां न कीड़ा, और न काई बिगाड़ते हैं ओर जहां चोर न सेंध लगाते और न चुराते है। क्योंकि जहां तेरा धन है वहां तेरा मन भी लगा रहेगा।" (मत्ती 6:19-21)। इसलिये पहिले तुम उसके राज्य और धर्म की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी तुम्हें मिल जाएंगी।" (मत्ती 6:33)।

यीशु ने कहा, "मांगो तो तुम्हें दिया जाएगा; ढूंढो, तो तुम पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जाएगा। क्योंकि जो कोई मांगता है, उसे मिलता है; और जो ढूंढ़ता है, वह पाता है; और जो खटखटाता है, उसके लिये खोला जाएगा।" (मत्ती 7:7, 8)। संकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और चाकल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उससे प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और सकरा है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।" (मत्ती 7:13, 14)।

यदि मैं यीशु का प्रचार करूं; तो न मैं केवल उसकी प्रभावशाली शिक्षाओं का ही बयान करूंगा; परन्तु मैं उसके सामर्थपूर्ण कामों के बारे में अवश्य बताऊंगा। मैं आपको बताऊंगा कि कैसे उसके एक हल्के से स्पर्श से ही अंधे देखने लगते थे, लंगड़े चलने लगते थे, और हर तरह की बीमारी वाले लोग उसके द्वारा चंगे किए जाते थे। (मत्ती 4:23-25; मत्ती 8:14-16)। एक बार, झील में, जब वह अपने चेलों के साथ नाव पर सवार होकर यात्रा कर रहा था, तो एक ऐसा बड़ा तूफान उठा कि नाव डुबने पर थी। उसके चेलों ने घबराकर कहा, हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते है। तब उसने उठकर कहा, हे प्रभु, हमें बचा, हम नाश हुए जाते है। तब उसने उठकर आंधी और पानी को डांटा, और सब उसी घड़ी शांत हो गया। (यूहन्ना 8:23-27)। एक दिन उसने कुल मुट्ठी भर भोजन अपने हाथ में लिया, और उसके द्वारा वहां एकत्रित हजारों लोगों की एक बहुत बड़ी भीड़ को भोजन खिलाकर तृप्त किया। (यूहन्ना 6:1-14)। जब वह बैतनिय्याह नाम के एक गांव में आया, तो उसे मालूम हुआ, कि लाजर नाम का उसका एक मित्र मर चुका है, और उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके है। तब वह लोगों के साथ उस कब्र पर आया और उसने लाजर को पुकारा। और तब, उस की आवाज सुनते ही, जो मर गया था, वह कफन में हाथ पांव बंधे हुए तुरन्त कब्र में से बाहर आ गया। (यूहन्ना 11:43, 44)।

फिर, यदि मैं यीशु का प्रचार करूं, तो मैं अवश्य ही आपको उसकी मृत्यु

और गाड़े जाने और मृतकों में से जी उठने के बारे में भी बताऊंगा। मैं आपको बताऊंगा कि यह परमेश्वर की इच्छा थी, और इसी कारण उसने अपने पुत्र को इस संसार में भेजा था, कि वह हर एक मनुष्य के लिये मृत्यु का स्वाद चखे। (इब्रानियों 2:9)। ताकि वह हमारे पापों को अपनी देह पर लेकर क्रूस के ऊपर चढ़ जाए, जिससे हम पापों के लिये मर करके धार्मिकता के लिये जीवन बिताएं। (1 पतरस 2:24)। सो परमेश्वर के पूर्व ज्ञान के अनुसार यीशु को क्रूस पर चढ़ाकर मृत्यु दण्ड दिया गया। जब वह मर गया, तो कुछ लोगों ने उसे लेकर एक कब्र में दफना दिया। परन्तु उसके बाद उस समय लोगों के आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने उसी यीशु को तीसरे दिन फिर से जीवित देखा। (मत्ती 28:1-10)।

यीशु का प्रचार करते हुए, मुझे चाहिए कि मैं आपको बताऊं, कि जी उठने के बाद वह चालीस दिन तक इस पृथ्वी पर रहा, और सैकड़ों लोगों ने उसे देखा। (प्रेरितों 1:3;1 कुरिन्थियों 15:6)। मुझे चाहिए, कि मैं आपको बताऊं, कि अन्त में स्वर्ग पर वापस जाने से पहिले उसने अपने चेलों के पास आकर कहा, "कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है। इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो। और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ और देखो, मैं जगत के अन्त तक सदैव तुम्हारे संग हूं।" (मत्ती 28:18-20)। मुझे, चाहिए, कि मैं आपको बताऊं कि प्रभु ने कहा, कि इन बातों को सुनकर, "जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा।" (मरकुस 16:16)। यदि मैं यीशु का प्रचार करूं, तो मुझे चाहिए कि मैं ये सारी बातें आपको बताऊं। और तब, यह आपकी जिम्मेदारी हो जाती है कि आप उस में विश्वास लाकर उसकी आज्ञा का पालन करें।

एक जगह हम देखते हैं कि जब फिलिप्पुस ने खोजे को यीशु का सुसमाचार सुनाया, तब खोजे ने सुनकर फिलिप्पुस से कहा, "देख, यहां जल है अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है?" 'फिलिप्पुस ने कहा, यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो हो सकता है, उसने उत्तर दिया कि मैं विश्वास करता हूं कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है। तब उसने रथ खड़ा करने की आज्ञा दी, और फिलिप्पुस और खोजा दोनों जल में उतर पड़े, और उसने उसे बपतिस्मा दिया।" (प्रेरितों 8:35-38)।

परन्तु, यीशु के सुसमाचार को पढ़कर आप क्या करने जा रहे हैं?

प्रार्थना के द्वारा क्या हो सकता है?

जे. सी. चोट

बाइबल के इस अध्ययन में हम प्रार्थना के विषय में देखना चाहेंगे। क्या आपका प्रार्थना में विश्वास है? क्या आप यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर प्रार्थनाओं को सुनता हैं तथा उनका उत्तर देता है? कई लोग इस बात में विश्वास नहीं करते? परन्तु मैं प्रार्थना में विश्वास करता हूं। प्रार्थना के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है।

आइये बाइबल से देखते हैं कि वचन प्रार्थना के विषय में क्या कहता है? प्रार्थना का अर्थ है जब हम परमेश्वर से बातें करते हैं। इसका अर्थ उससे बिनती करना, उससे मांगना तथा इसके द्वारा उसका धन्यवाद करना। प्रेरित पौलुस ने तीमुथियुस से कहा था, "अब मैं सबसे पहिले यह उपदेश देता हूं, कि बिनती और प्रार्थना और निवेदन; और धन्यवाद, सब मनुष्यों के लिये किये जाएं। राजाओं ओर सब ऊंचे पद वालों के निमित्त इसलिये कि हम विश्राम और चैन के साथ सारी भक्ति और गम्भीरता से जीवन बिताएं" (1 तीमु. 2:1-2)। फिलिप्पी में कलीसिया को पौलुस लिखता है, "किसी भी बात की चिंता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किये जाएं।" (फिलि. 4:6)। हम देखते हैं कि प्रार्थना का अर्थ हैं परमेश्वर से बातें करना।

इससे पहिले कि हम यह देखें कि प्रार्थना के द्वारा क्या हो सकता है, आइये यह देखें कि प्रार्थना के द्वारा क्या नहीं हो सकता? प्रार्थना के विषय में लोगों के मनों में कुछ अनुचित धारणाएं हैं। कई लोग शिक्षा देते है कि यदि पापी मनुष्य प्रार्थना करे तो उसका प्रार्थना के द्वारा उद्धार हो सकता है तथा उनकी शिक्षा यह है कि उसी समय प्रार्थना द्वारा उनके पाप क्षमा हो जाएंगे। बाइबल शिक्षा देती है कि यदि कोई मसीही पिता से प्रार्थना करे तो उसके पाप क्षमा हो जाएंगे। (याकूब 5:16)। लेकिन बात में भिन्नता है कि एक मसीही की प्रार्थना तथा एक गैर-मसीही की प्रार्थना। मसीही व्यक्ति परमेश्वर की संतान है। उसके पास परमेश्वर से प्रार्थना करने का सुअवसर है। बाइबल में हम कहीं पर भी नहीं पढ़ते कि प्रार्थना के द्वारा किसी पापी का उद्धार हुआ हो। बल्कि वचन हमें यह शिक्षा देता है कि एक पापी व्यक्ति सुसमाचार को सुनता है, परमेश्वर में विश्वास करता है तथा यह विश्वास करके अंगीकार करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, और अपने पापों से मन फिराकर जल में बपतिस्मा लेता है। यीशु ने कहा था "जो विश्वास करेगा और बपतिस्मा लेगा उसी का उद्धार होगा।" (मरकुस 16:16)। पतरस ने पिन्तेकुस्त के दिन अपने प्रचार में लोगों से कहा "मन फिराओ और तुम

में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के यीशु के नाम से बपतिस्मा ले तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे" (प्रेरितों 2:38) जब उन्होंने वचन ग्रहण करके बपतिस्मा लिया तब वे कलिसिया में मिलाये गये। (प्रेरितों 2:47)। इसके पश्चात वे प्रेरितों से शिक्षा पाने, रोटी तोड़ने (प्रभु भोज) और प्रार्थना करने में लौलिन रहे। (प्रेरितों 2:42)।

आज बहुत से लोग यह विश्वास करते हैं कि प्रार्थना के द्वारा आश्चर्यक्रम होते है। आश्चर्यक्रम का अर्थ होता है प्राकृति के विरूद्ध कुछ करना। यानि किसी का हाथ सूखा हुआ है या आधा हाथ है उसे पूरा अच्छा हाथ दे देना। कोई व्यक्ति जन्म से अंधा है उसे नई आंखें देना। हमारा परमेश्वर शक्तिशाली है और वह यह कर सकता है परन्तु आज इसकी आवश्यकता नहीं है। यीशु ने और उसके प्रेरितों ने बहुत से आश्चर्यक्रम किये थे। अब परमेश्वर का वचन पूर्ण हो चुका है, इसलिये आश्चर्यक्रमों की आवश्यकता नहीं है। हां हम मसीहीयों के पास प्रार्थना करने का अधिकार है। प्रार्थना द्वारा परमेश्वर इलाज को तथा दवाईयों को आशिषित करता है और लोग चंगे होते हैं। हम प्रार्थना करते हैं तथा साथ ही इलाज भी करवाते है तथा परमेश्वर हमारी सहायता करता है।

परन्तु हमें यह देखना है कि प्रार्थना के द्वारा क्या हो सकता है? प्रार्थना करना, मसीहियों के लिये आशिष की बात है। परमेश्वर अपने लोगों की प्रार्थनाओं को सुनता है। यदि आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपकी प्रार्थना को सुने तब आपको उसकी संतान बनने की आवश्यकता है। यदि कोई स्वर्ग में जाना चाहता है तो उसे परमेश्वर की संतान बनना पड़ेगा।

फिलिप्पियों 4:6 कहता है कि तुम्हारे निवेदन प्रार्थना उसके सम्मुख उपस्थित किये जाये। अपनी सारी आशिषों के लिये उसे धन्यवाद दें। याकूब कहता है, "और विश्वास की प्रार्थना के द्वारा रोगी बच जाएगा और प्रभु उसे उठाकर खड़ा करेगा।" (याकूब 5:16)। परमेश्वर अपने कार्य अनुसार कार्य करता है। कई लोग रोगी का इलाज नहीं कराते जो कि गलत है। प्रार्थना के साथ-साथ हमें रोगी का इलाज करवाना भी आवश्यक है। जितने भी अस्पताल, डाक्टर, दवाईयां परमेश्वर की दया से ही हैं। परमेश्वर बिना इलाज के भी ठीक कर सकता है परन्तु वह ऐसा नहीं चाहता। एक समय था जब परमेश्वर आश्चर्यक्रम करके लोगों को चंगा करता था। परमेश्वर ने अपने वचन में कहा है, "इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलताओं में हमारी सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करनी चाहिए, परन्तु आत्मा आप ही ऐसी आहें भर-भर कर जो बयान से बाहर है, हमारे लिये बिनती करता है। और मनों को जांचने वाला जानता है, कि आत्मा की मनसा क्या है? क्योंकि वह पवित्र लोगों के लिये परमेश्वर की इच्छा के अनुसार बिनती करता है। (रोमियों 8:27-28)।

हमारी समस्या यह है कि हम नहीं समझते कि प्रार्थना क्या है और हमें

प्रार्थना कैसे करनी चाहिए? हमारा पिता परमेश्वर जानता है कि हमारी क्या आवश्यकता है और अपनी इच्छा अनुसार वह हमें देता है। संसार में हमारे पिता जानते हैं कि हमें किस वस्तु की आवश्यकता है और किसकी नहीं है। यदि हम उसकी इच्छानुसार कुछ मांगते हैं तो वह हमें देता है। यूहन्ना ने इस बात को इस प्रकार से कहा था, "और हमें जो उसके साम्हने जो हियाव होता है। वह यह है, यदि हम उसका इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। और जब हम जानते हैं कि जो कुछ हम मांगते हें वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हम ने उससे मांगा वह पाया है।" (1 यूहन्ना 5:14-15)।

हम कई बार गलतियां करते हैं क्योंकि हम मनुष्य है परन्तु हम परमेश्वर से हमेशा प्रार्थना कर सकते है और वह हमें क्षमा करता है। यूहन्ना लिखता है, "यदि हम अपने पापों को मान ले, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वास योग्य और धर्मी है। (1 यूहन्ना 1:9)।

परमेश्वर की संतान होते हुए हम अपने लिये प्रार्थना कर सकते हैं तथा दूसरों के लिये भी प्रार्थना कर सकते हैं। अपने परिवारों के लिये और अपने देश के लिये प्रार्थना कर सकते है। जो बीमार है तथा जो दुखी हैं, उनके लिये प्रार्थना करें। प्रार्थना हमारे जीवन का एक हिस्सा है। यदि आप एक मसीही है तो प्रार्थना करना न भूलिये।

परमेश्वर का ध्यान कैसे खींचे

क्या आपको कभी लगा है कि परमेश्वर आपकी बात नहीं सुन रहा है? ऐसा लगता कि परमेश्वर इतना दूर है कि आप उसका ध्यान अपनी ओर नहीं खींच सकते? हो सकता है कि कई बार आपको लगा हो कि आप पहाड़ी के शिखर पर उगे वृक्ष की तरह, आंधी, वर्षा, और बर्फबारी से अकेले लड़ रहे हैं। बोझ से कई बार आप नीचे तक झुक जाते हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे अब आप टूट ही जाएंगे। आप चकित होते हैं और मैं समझ नहीं पाता कि जड़ से उखाड़े जाने से बचने के लिए क्या करें।

परमेश्वर कुछ करता क्यों नहीं है? क्या उसे दिखाई नहीं देता कि आप किस हाल में हैं? क्या उसे परवाह नहीं है कि आपके साथ क्या हो रहा है? यिर्मयाह को भी यहूदा और अपनी पीड़ा को देखकर ऐसा ही लग रहा होगा। कई बार उसने बहुवचन में और कई बार एकवचन में बात की। पीड़ा की ये अभिव्यक्तियां केवल उसी कष्ट उठाने वाले की ही नहीं, बल्कि उसकी व्यक्तिगत व्यथा पूरी इस्राएल जाति की थी। उसे मालूम था कि यहूदा इस योग्य नहीं है कि उसका विशेष पक्ष लिया जाये, परन्तु उसे यह भी मालूम था कि परमेश्वर दयालु और करूणा करने वाला है।

विलापगीत की पुस्तक के इस भाग में, यिर्मयाह ने परमेश्वर की करूणा पाने के लिए जो कुछ लोगों के लिए करना आवश्यक है, उसी को दिखाया है। यहेजकेल ने कहा था, "अपने सब अपराधों को जो तुम ने किए हैं, दूर करो; अपना मन और अपनी आत्मा बदल डालो। हे इस्राएल के घराने, तुम क्यों मरो? प्रभु यहोवा की यह वाणी है, ...इसलिए पश्चाताप करो, तभी तुम जीवित रहोगे" (यहेजकेल 18:31, 32)।

परमेश्वर का ध्यान खींचने के लिए हम क्या करते हैं? घर से भटकने और परमेश्वर को नाराज करने वाले जीवन में लगे होने पर यिर्मयाह बताता है कि क्या करें। हमें पश्चाताप करने की आवश्यकता है इसलिये पश्चाताप करो।

पश्चाताप मन का परिवर्तन है, जिससे व्यवहार और कार्य में परिवर्तन होता है। सच्चा पश्चाताप एकदम उलटा घूम जाना है। यिर्मयाह ने इसे तीन पग की प्रक्रिया बताया है: "हम अपने चाल-चलन को ध्यान से परखें, और यहोवा की ओर फिरे। हम स्वर्ग के परमेश्वर की ओर मन लगाएं और हाथ फैलाएं" (विलापगीत 3:40, 41)।

पहला कदम हमें "अपने चाल-चलन को ध्यान से परखना" है (विलापगीत 3:40क)। पश्चाताप तभी होता है, जब हमें परिवर्तन करने की आवश्यकता का अहसास हो। अपने कार्यों तथा व्यवहार में परिवर्तन करने की आवश्यकता को महसूस करना आसान नहीं हैं। किसी के सुझाव मात्र से ही कि हमें अपनी सोच और व्यवहार में सुधार करने की आवश्यकता है, हम बचाव की मुद्रा में आ जाते हैं। यहूदा के लोगों की यही समस्या थी। उन्हें न तो अपने पापी होने का अहसास था और न ही वे अपनी गलती मानना चाहते थे। अपने चाल-चलन को परखने के बजाय उन्होंने परमेश्वर के चाल-चलन को परखकर उसी को अन्यायी बता दिया था। उन्होंने उसके दूत यिर्मयाह को परखा और उसे शत्रु की तरफ बढ़ाया। उनके लिए अपने मनों और जीवनों में झांकना कठिन था।

हमें परमेश्वर के वचन के प्रकाश में अपने आप को दूर तक देखने की आवश्यकता है। उसका वचन उस आइने की तरह है, जो सही-सही शक्ल दिखाता है (याकूब 1:21-25)। परमेश्वर के वचन के द्वारा हम अपने आप को वैसे ही देख सकते हैं, जेसे परमेश्वर हमें देखता है। हम सब की तीन शक्लें होती हैं : एक जो हम अपने बारे में सोचते हैं, दूसरी जो लोग हमारे बारे में सोचते हें और तीसरी जो परमेश्वर हमारे बारे में सोचता है। जैसे हम अपने आप को देखते हैं, हो सकता है कि परमेश्वर न देखता हो। जैसे हम अपने आप को देख सकते हैं, आवश्यक नहीं कि दूसरे लोग हमें वैसे ही देखते हों। हमारी सही शक्ल केवल वही है, जो परमेश्वर देखता है। अपने आप को परमेश्वर की आंखों से देखने के लिए उसके वचन का गहन अध्ययन आवश्यक है।

"परखें" शब्द में "आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है" लेकर अपने मन की खोज करने की आवश्यकता का संकेत है (इफिसियों 6:17)।

अपनी तुलना दूसरे लोगों से करने पर हम गलत पढ़ लेते हैं, क्योंकि हम त्रुटिपूर्ण आदर्शों का इस्तेमाल कर रहे होते हैं। परमेश्वर का वचन हमारी तुलना यीशु के साथ करता है, जो सम्पूर्ण आदर्श है : "जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था, वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो" (फिलिप्पियों 2:5)। अपनी आंखें मसीह पर लगाकर जब हम उसके जैसे बनने की कोशिश करते हैं तो हम "..प्रभु का प्रताप ...जिस प्रकार दर्पण में, ...उसी तेजस्वी रूप में अंश-अंश कर के बदलते जाते हैं। (2 कुरिन्थियों 3:18)।

पश्चाताप के लिए दूसरा कदम "यहोवा की ओर फिरना" है (आयत 40ख)। सदियों तक परमेश्वर यह बताने के लिए कि उसकी ओर लौट आओ, यशायाह और यिर्मयाह जैसे अपने लोगों को भेजता था। इस्राएली उन चेतावनियों को नजर अंदाज करते थे कि वे गलत दिशा में जा रहे थे। वे इस बात से इंकार करते थे कि उन्होंने यहोवा को छोड़ दिया है और नबियों को सिरफिरे सनकी बताया करते थे। अपने भ्रमित चाल-चलन के परिणामों को भुगतने के बाद ही उन्हें अपनी परख करने और परमेश्वर की ओर लौटने की आवश्यकता महसूस होती थी। परमेश्वर की ओर लौटना पश्चाताप के लिए किया जाने वाला कार्य था।

कई बार आत्मिक उन्नति की ओर जाने वाले मार्ग पर चलने का अर्थ मुड़ कर उस जगह वापस जाना होता है, जहां जीवन का पहिया घूमा था। शैतान किसी अधिक आकर्षक या अधिक संतुष्टि देने वाली चीज के पास चक्र लगवाने के लिए हमें प्रलोभन देकर धार्मिकता के मार्ग के आस-पास खड़ा रहता है। उसे मालूम होता है कि हमारी आवश्यकताओं की ओर ध्यान दिलाने के लिए क्या वायदा करना है। हम यह सोचकर कि परमेश्वर की ही इच्छा है कि हम उस मार्ग में जाएं, विश्वास के साथ उस गलत मार्ग में चले जाते हैं। शैतान को उम्मीद होती है कि हम इतने दूर निकल जाएंगे कि बाद में गलती का अहसास होने पर भी वहां से वापस नहीं आ पाएंगे। उसका एकमात्र हल हर हाल में परमेश्वर की ओर लौटना है। चक्कर में पड़े रहने की कीमत से बड़ी कोई कीमत नहीं होगी।

तीसरा, पश्चाताप के लिए "स्वर्गवासी परमेश्वर की ओर मन लगाना और अपने हाथ फैलाना" (विलापगीत 3: 41) आवश्यक है। आर. के. हैरिसन ने सुझाव दिया है कि इसका एक वैकल्पिक पाठ अधिक सही हो सकता है कि "हम अपने मनों को ऊपर उठाएं, न कि हाथों को।" उसकी बात का तात्पर्य है कि परमेश्वर के लोग आराधना की कर्मकांडी अभिव्यक्तियों के द्वारा परमेश्वर के पास जा रहे थे। वे सही हावभाव और उचित शब्दों का उच्चारण करते हुए अपने हाथ सही ढंग से उठा रहे थे, पर वे परमेश्वर के लिए अपने मनों को उठाने में इतना सही नहीं थे। परमेश्वर के अपने लोग दूसरे देवताओं के सामने अपने मनों और हाथों को उठा रहे थे; उनके लिए अपने मनों और हाथों को उठाकर सच्चे परमेश्वर की ओर लौटना आवश्यक था।

परमेश्वर ने उन्हें उन्हीं जातियों के हाथों में दे दिया, जिनकी मूर्तियों की वे पूजा करते थे, परन्तु वे देवता उनकी सहायता नहीं कर पाए। अन्त में उन्हें इस बात का अहसास हुआ। अपने मनों और हाथों को परमेश्वर की ओर मोड़ना व्यवहार तथा कार्य दोनों बदलने का सुझाव देता है। अपने मनों से हम विश्वास (रोमियों 10:10) और हाथों से सेवा करते हैं।

प्रार्थना करो

यीशु द्वारा उदाहरण देकर अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाने की तरह (मत्ती 6:9) यिर्मयाह ने लोगों से प्रार्थना करने का आग्रह किया और उन्हें उदाहरण दिया कि प्रार्थना कैसे करनी है, "हम ने तो अपराध और बदलवा किया है, और तू ने क्षमा नहीं किया। तेरा कोप हम पर है, तू हमारे पीछे पड़ा है, ...तू ने अपने को मेघ से घेर लिया है कि तुझ तक प्रार्थना न पहुंच सके। तूने हम को जाति-जाति के लोगों के बीच में कूड़ा-कर्कट सा ठहराया है। हमारे सब शत्रुओं ने हम पर अपना-अपना मुंह फैलाया है; भय और गड्हा, उजाड़ और विनाश, हम पर आ पड़े हैं" (विलापगीत 3:42-47)।

यहां दिए नमूने का पालन आप कैसे कर सकते हैं? पहले तो अपने अपराधों और विद्रोह करने की बात को मान लें (विलापगीत 3:42क)। आत्मिक नयापन परमेश्वर के सामने गंदगी को मान लेने से ही आरंभ होता है (तु.एजा 9:5-15; नहेम्याह 1:5-11)। सामर्थपूर्ण प्रार्थना इस बात को मानती है कि परमेश्वर सब कुछ है और बिना परमेश्वर के मनुष्य कुछ भी नहीं।

दूसरा मानें कि आप का अपराध ही परमेश्वर के सामने से आपके काटे जाने का कारण है कि परमेश्वर ने आप का पाप क्षमा नहीं किया है (विलापगीत 3:42ख)। एक-एक से घात होने तक परमेश्वर का क्रोध बलवा करने वालों का पीछा करता है (विलापगीत 3:43)। क्या स्वर्ग के साथ आपके सम्पर्क में कभी बाधा आई है, जैसे किसी बड़े बादल ने आप को परमेश्वर से अलग कर दिया हो (विलापगीत 3:44)। क्या आपके पड़ोसी और आपके पूर्व मित्र आपके बारे में इस प्रकार बात करते हैं, जैसे कि आप कूड़ा-कर्कट हो (विलापगीत 3:45, 46)? जब आतंक आप पर छाया हो और बर्बादी आपको घेरे हो, वह भी पाप के कारण (विलापगीत 3:47) तो इसका समाधान इस प्रकार से प्रार्थना करना है, जैसे आपने पहले कभी न की हो।

कलीसिया का कार्य

कलीसिया का कार्य क्या है? हम देखेंगे कि इसके वजूद में होने का कोई विशेष

उद्देश्य है। इसे बहुत से कार्य दिए गए हैं और उन कार्यों को कलीसिया करती है। परन्तु कलीसिया का कार्य कारोबार करना या खरीद फरोख्त करना नहीं है। कलीसिया का कार्य यह नहीं है कि लोगों को नौकरी पर लगवाएं या प्रचारकों की नौकरी की व्यवस्था करे। और न ही कलीसिया का यह कार्य है कि हर गांव और शहर में स्कूल खोले। नौकरी, स्कूल इत्यादि सब बहुत आवश्यक है और इन पर ध्यान देना चाहिए, परन्तु कलीसिया की इन बातों में कोई प्राथमिकता नहीं है।

हां कलीसिया को कार्य दिया गया है परन्तु यह उस प्रकार का कार्य नहीं है जैसा कि अक्सर लोग सोचते हैं।

कलीसिया को संसार में सबसे बड़ा कार्य दिया गया है, और केवल कलीसिया ही इस कार्य को कर सकती है और यह विशेष कार्य है प्रभु यीशु के सुसमाचार को सारे संसार में पहुंचाना, जिसके द्वारा परमेश्वर की महिमा होगी। इसलिए कलीसिया के लिए आज सुसमाचार हर जगह ले जाना आवश्यक है।

कलीसिया का कार्य दो प्रकार का है। सुसमाचार का प्रचार करना ताकि आत्माओं को बचाया जा सके, और दूसरा यह है कि निर्धनों की सहायता करना तथा जो जरूरतंद हैं उनकी मदद करना ।

आइए पहले इस बात पर ध्यान दें कि कलीसिया की बसे बड़ी जिम्मेदारी क्या है? कलीसिया की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है सुसमाचार का प्रचार करना। जब यीशु ने अपने चेलों को महान आज्ञा यानी ग्रेट कमीशन दिया था तो उसने स्वयं कहा था, "तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो" (मरकुस 16:15)। मत्ती ने इसे इस प्रकार लिखा, "इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उनहें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो" (मत्ती 28:19)। इसलिए कलीसिया की यह सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि वह जाकर दूसरों को सुसमाचार सुनाए। हमें हर जगह, जहां भी हम जा सकें जाना, तथा प्रत्येक जन को सुसमाचार सुनाना है आवश्यक है, ताकि उनकी आत्माएं बच सकें।

प्रभु ने यह नहीं कहा था कि हमें कैसे जाना है परन्तु उसने यह कहा था कि "जाओ"। उसने प्रचार का कोई विशेष तरीका नहीं बताया था परन्तु यह कहा था कि जाओ और प्रचार करो। अब इस बात को याद रखिए कि हमें जाकर लोगों को अपने विचार नहीं बताने हैं, मनुष्यों की शिक्षाओं को नहीं सिखाना है और न ही अपने बारे में बताते हुए अपनी गवाही देनी है बल्कि हमें सुसमाचार सुनाना है। कई लोग सुसमाचार सुनाने के बजाय अपनी गवाही देना अधिक पसंद करते हैं। हम व्यक्तिगत रूप से प्रचार कर सकते हैं। टेलीविजन के द्वारा, रेडियो के द्वारा तथा पर्चों और साहित्य के द्वारा प्रचार कर सकते हैं। चाहे कोई भी तरीका हो, हमें सुसमाचार का प्रचार करना है। 2 तीमुथियुस 4:2 में लिखा है, "सुसमाचार का प्रचार कर।" हमें क्या प्रचार करना है? केवल परमेश्वर के वचन का।

जो भी कार्य कलीसिया के द्वारा किया जाता है उसे करते हुए हमें दिमाग

में यह बात रखनी चाहिए कि हमें आत्माओं को बचाना है। इसलिए हम सुसमाचार का प्रचार कर सकते हैं। हमारा उद्धार हुआ है और इसलिए हमें दूसरों की सहायता करनी है ताकि उनका भी उद्धार हो सके। और यह आज्ञा सब मसीहियों के लिए है।

कलीसिया का कार्य यहीं पर रूक नहीं जाता बल्कि यह पहले कार्य को जारी रखते हुए किया जाता है। कलीसिया को जरूरतमंद लोगों की भी सहायता करनी आवश्यक है। जब प्रभु यीशु इस पृथ्वी पर था, तो वह निर्धनों की सहायता किया करता था और जरूरतमंद लोगों की सहायता किया करता था। और प्रभु हम सबसे भी यही चाहता है यदि हम दूसरों के विषय में नहीं सोचते हो हमारे अन्दर प्रभु का आत्मा नहीं है (रोमियों 8:9)।

जब हम किसी की सहायता करते हैं तो हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जो सचमुच जरूरतमंद हैं उनकी सहायता की जाए (1 तीमुथियुस 5)। कई बार हम शायद ऐसे लोगों की सहायता करने में अपना समय नष्ट कर देते हैं जो इसके योग्य नहीं होते और हो सकता है कि कुछ लोग कलीसिया की अच्छाई का फायदा उठा रहे हों।

कलीसिया बहुत कुछ कर सकती है और यह तभी सहायता कर सकती है जब इसके पास सहायता के साधन उपलब्ध हो तथा वह सहायता करने के योग्य है। पर चाहे कुछ भी हो भूखों को खिलाना, कपड़े देना, भला कार्य है तथा हमें भरसक प्रयत्न करना चाहिए कि हम लोगों की सहायता कर सकें। याकूब कहता है, "हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं के कलेश में उनकी सुधि लें, और अपने आपको संसार से निष्कलंक रखें" (याकूब 1:27)।

हर किसी को सबसे अधिक यह याद रखना चाहिए कि वह अपने परिवार की देखभाल करे (1 तीमुथियुस 5:8)। यदि कोई अपने परिवार की देखभाल नहीं करता है तो वह विश्वास से मुकर गया है, और अविश्वासी से भी बुरा बन गया है। कुछ लोग ऐसा भी कहते हैं कि आप किसी को सुसमाचार तब तक नहीं दे सकते जब तक वह भूखा है तथा उसके पास जरूरत की चीजें नहीं है। यह सत्य है और कलीसिया को इस बात में सहायता करनी चाहिए। हम किसी का पेट तो भर देते हैं परन्तु उन्हें आत्मिक भोजन देना भूल जाते हैं इसलिए हमें लोगों की आत्मिक स्थिति की अधिक चिंता होनी चाहिए।

याद रखिए कि प्रभु चाहता है कि हम सबका उद्धार हो। वह नहीं चाहता कि कोई भी नाश हो बल्कि चाहता है कि सबको मन फिराव का अवसर मिले। परन्तु मनुष्य का उद्धार तभी होता है जब उसे सुसमाचार सुनने का अवसर मिलता है तथा जब वह इसकी आज्ञा मानता है। सुसमाचार प्रचार करना हो या गरीबों की सहायता करना हो, कलीसिया का ही कार्य है।

क्या स्त्री ऐल्डर या डीकन बन सकती है?

बैटी बर्टन चोट

बदल रहे इस संसार में अधिक से अधिक स्त्रियां हर वह काम करना चाहती हैं जिसे करने की अनुमति पुरुषों को दी गई है। धार्मिक मामलों में भी आमतौर पर स्त्रियां पर्दे के पीछे से अपने पतियों को बताती हैं कि कलीसिया में वे क्या करें और क्या नहीं। कई स्त्रियां यदि उनके पति प्रचारक हैं तो वह अपने पतियों को बहुत सी बातें लाने या उन्हें बदलने के लिये कहती हैं। पिछले एक पाठ में हमने पढ़ा था कि परमेश्वर ने पुरुष को जिम्मेदारी दी थी कि वह स्त्री की अगुआई करे। यदि पुरुष इतने शक्तिशाली हों कि वे अपना कर्त्तव्य ठीक ढंग से निभाते हों, तो परमेश्वर को इससे प्रसन्नता होती है। परन्तु यदि वे निर्बल हैं और अपनी जिम्मेदारी को भूलकर स्त्री को अपने सिर पर चढ़ा लेते हैं तो इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि परमेश्वर इस उलटी भूमिका को स्वीकार कर लेगा। आज भी, परमेश्वर पुरुष को ही जिम्मेदार ठहराता है।

आलोचक कई बार पौलुस के विषय में ओछी बातें कहते हैं, क्योंकि उसी की कलम के द्वारा परमेश्वर ने आज्ञा दी थी कि स्त्रियां कलीसिया की सभा में उपदेश नहीं दे सकती और न ही उन्हें पुरुष पर आज्ञा चलाने की अनुमति है। (1 तीमुथियुस 2:12; 1 कुरिन्थियों 14:34, 35)। इन वचनों के संबंध में कुछ लोग यह कहकर पौलुस का मजाक उड़ाते थे कि पौलुस ने स्वयं शादी नहीं की थी, इसलिए उसे स्त्रियां नापसंद थी। परन्तु अन्य लेखकों की तरह पौलुस ने जो कुछ भी लिखा वह पवित्र आत्मा के आदेश से लिखा गया था। उसने कुछ भी अपनी समझ या पसंद के अनुसार नहीं लिखा। 2 तीमुथियुस 3:16-17 में हम पौलुस का लिखा पत्र पढ़ते हैं, "हर एक पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है; ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।"

यदि हम समझना चाहें तो अगुआई करने के संबंध में हमारे लिए परमेश्वर के नियम को समझना बहुत आसान है।

पुराने और नये, दोनों नियमों को लिखने के लिए लगभग चालीस जनों का इस्तेमाल हुआ- परन्तु उनमें से एक भी स्त्री नहीं थी।

इस्राएल जाति के जन्म में याकूब के बारह पुत्र और एक पुत्री थी- परन्तु हम इस्राएल के बारह गोत्रों की बात करते हैं, जिनमें हर गोत्र याकूब के पुत्रों की संतान हैं। हम असंख्य पूर्वजों (परिवार के पुरखाओं), याजकों (याजिकाओं नहीं), न्यायियों (इस्राएल में एक महिला न्यायी-दबोरा ही थी जिसका उल्लेख न्यायियों 4:1-9 में है। इस महिला न्यायी का चयन इसलिए किया गया था क्योंकि

परमेश्वर की दृष्टि में इस्राएली लोग बुराई में पड़ गए थे और स्पष्टतया किसी भी पुरुष में इस्राएल की अगुआई करने के लिए पर्याप्त विश्वास और साहस नहीं था। जैसा कि हम आयत 9 में पढ़ते हैं कि इस्राएल के पुरुषों के लिए यह लज्जा की बात थी), राजाओं तथा अन्य पुरुषों के विषय हम पढ़ते हैं जिन्हें नेतृत्व के लिए परमेश्वर की ओर से ठहराया जाता था।

बावजूद इसके कि स्त्रियों के घरों में कलीसियाओं के इकट्ठा होने का उल्लेख है, नये नियम में प्रचारकों तथा अगुओं का नाम भी आता है।

हम बारह मूल प्रेरितों के बारे में जानते हैं, जो कि सभी पुरुष (नर) थे- बेशक यीशु की संगति में कुछ ऐसी स्त्रियां थी जिनका विश्वास इन प्रेरितों से भी बढ़कर था (लूका 24:10, 11)। इससे पता चलता है कि पुरुष को परिवार में और कलीसिया में इसलिए नहीं ठहराया गया कि वह स्त्री की तुलना में अधिक समझदार या गुणी या अधिक विश्वासी है, बल्कि इसलिए ठहराया गया है कि उसे पहले सृजा गया और परमेश्वर की ओर से उसे अधिकार दिया गया। इसलिए उसे परमेश्वर द्वारा दी गई जिम्मेदारी, अगुआई करने की ही नहीं बल्कि अपनी पूरी ताकत से अगुआई करने की है।

नये नियम में हमें पता चलता है कि कलीसिया की स्थानीय मण्डलियां होती हैं और प्रत्येक मण्डली दूसरी मण्डली से स्वतंत्र है, और प्रत्येक स्थानीय मण्डली का संचालन योग्य ऐल्डरों और डीकनों के द्वारा किया जाता है (प्रेरितों 14:23, फिलिप्पियों 1:1; तीतुस 1:5)। इन पदों पर ठहराए जाने के लिए वे योग्यताएं होनी आवश्यक हैं जो हमें 1 तीमुथियुस 3:2-12 और तीतुस 1:5-9 में मिलती हैं।

"सो चाहिए, कि अध्यक्ष (बिशपों, बुजुर्गों/प्राचीनों (ऐल्डरों या पास्टरों यानी पासबानों) के लिए और शब्द। याद रखें कि मूल यूनानी में नये नियम में इन शब्दों का इस्तेमाल बहुवचन रूप में किया गया है। यानी ये सभी शब्द एक ही पद के लिए हैं ही, पर इसमें से कोई भी अकेला नहीं होता था। कम से कम दो एल्डर ही किसी मण्डली के पास्टर/पासबान हो सकते हैं) निर्दोष और एक ही पत्नी का पति, संयमी, सुशील सभ्य, पहुनाई करने वाला, और सिखाने में निपुण हो।

पियक्कड़ या मारपीट करने वाला न हो; वरन कोमल हो, और न झगड़ालू और न लोभी हो।

(जब कोई अपने घर ही का प्रबंध करना न जानता हो, तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली क्योंकर करेगा)।

फिर यह भी नया चेला न हो, ऐसा न हो, कि अभिमान करके शैतान का सा दण्ड पाए।

और बाहर वालों में भी उसका सुनाम हो, ऐसा न हो कि निन्दित होकर शैतान के फंदे में फंस जाए" (1 तीमुथियुस 3:2-7)।

"...और मेरी आज्ञा के अनुसार नगर-नगर प्राचीनों को नियुक्त करे।

जो निर्दोष और एक ही पत्नी के पति हो, जिन के लड़के वाले विश्वासी हो और जिन में लुचपन और निरंकुशता का दोष न हो।

क्योंकि अध्यक्ष को परमेश्वर का भण्डारी होने के कारण निर्दोष होना चाहिए, न हठी, न क्रोधी, न पियक्कड़, न मारपीट करने वाला, और न नीच कमाई का लोभी।

पर पहुनाई करने वाला, भलाई का चाहने वाला, संयमी, न्यायी, पवित्र और जितेन्द्रिय हो।

और विश्वासयोग्य वचन पर जो धर्मोपदेश के अनुसार है, स्थिर रहे; कि खरी शिक्षा से उपदेश दे सके, और विवादियों का मुंह भी बंद कर सके" (तीतुस 1:5-9)।

ऐल्डरों की नियुक्ति के लिए दिए गए निर्देशों से कई बातों का पता चलता है: "हर जगह की कलीसिया में अपने ऐल्डरों (जो कि नेतृत्व के लिए बहुसंख्या है) का होना आवश्यक था।"

पुरुष के विवरण में यह बताया गया है कि "वह एक ही पत्नी का पति हो, ...अपने घर का अच्छा प्रबंध करता हो, और अपने बाल-बच्चों को सारी गंभीरता से अधीन रखता हो (जब कोई अपने घर ही का प्रबंध करना न जानता हो तो परमेश्वर की कलीसिया की रखवाली कैसे करेगा)?" (1 तीमुथियुस 3:2, 4, 5)।

जो पुरुष ऐल्डर बनने का इच्छुक है, उसके दो विवाह नहीं हुए होने चाहिए या उसकी एक से अधिक पत्नियां नहीं होनी चाहिए, न ही उसका तलाक हुआ हो, यानी उसकी केवल एक ही पत्नी हो। उसके लिए यह भी आवश्यक है कि अपने परिवार को परमेश्वर की शिक्षा के अनुसार आकार दे और सिखाए ताकि यह साबित हो जाए कि वह अच्छी अगुआई करने वाला व्यक्ति है और बच्चों की, सांसारिक हो या आत्मिक अगुआई अच्छी तरह से कर सकता है। कई वर्षों तक अपने परिवार की अगुआई करने के कारण उससे उम्मीद की जा सकती है कि जिस मण्डली की सेवा वह अन्य ऐल्डरों के साथ करता है उसे अच्छा नेतृत्व दे सकता है।

स्पष्ट है कि कोई स्त्री "एक ही पत्नी का पति" नहीं हो सकती। न ही वह अपने परिवार की अगुआ हो सकती है, जिस में अपने पति पर आज्ञा चलाकर उसे लगे कि परमेश्वर इससे प्रसन्न है। इसलिए वह ऐल्डर बनने के अयोग्य है, क्योंकि ऐसा करके वह कलीसिया के साथ-साथ अपने पति पर भी आज्ञा चलाने वाली बन जाएगी।

"वैसे ही सेवकों (यानी डीकनों) को भी गंभीर होना चाहिए, दो रंगी, पियक्कड़ और नीच कमाई के लोभी न हो। पर विश्वास के भेद को शुद्ध विवेक से सुरक्षित रखें। और ये भी पहिले परखे जाएं, तब यदि निर्दोष निकलें, तो सेवक (यानी डीकन) का काम करें।

इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गंभीर होना चाहिए; दोष लगाने वाली न हो, पर सचेत और सब बातों में विश्वासयोग्य हो।

सेवक (यानी डीकन) एक ही पत्नी के पति हो और लड़के बालों और अपने घरों का अच्छा प्रबंध करना जानते हो। क्योंकि जो सेवक का काम अच्छी तरह से कर सकते हैं, वे अपने लिए अच्छा पद और उस विश्वास में जो मसीह यीशु पर है, बड़ा हियाव प्राप्त करते हैं" (1 तीमुथियुस 3:8-13)।

आधिकारिक पद के अनुसार डीकनों का काम ऐल्डरों के अधीन होकर "सेवा" करना है, जो कि "डीकन" शब्द का अर्थ भी है। कुछ डिनोमिनेशनों में "ऐल्डर" का कोई पद नहीं होता। "डीकन" ही "ऐल्डर" का काम करते हैं, जबकि कथित "पास्टर" जिसे नये नियम के समय में ऐल्डर कहा जाता था) को सुसमाचार सुनाने वाले यानी इवैंजलिस्ट का काम सौंप दिया जाता है।

उपयुक्त पदों पर यह गड़बड़ी वचन के बाहर से है। हमें परमेश्वर के अधिकार को मानना आवश्यक है और हमें चाहिए कि उस पर ध्यान दें। जो कुछ वह हमें अपने वचन में बताता है उसने बता दिया है कि प्रत्येक कलीसिया में ऐल्डर होने चाहिए। फिर डीकनों का होना भी आवश्यक है। दोनों के लिए योग्यताएं उसने अपने वचन में बता दी हैं, इन दोनों पदों के लिए किसी को चुनने से पहले उसमें ये योग्यताएं होनी आवश्यक है। जब तक इन योग्यताओं वाले लोग नहीं होते तब तक कलीसिया ऐल्डरों और डीकनों के बिना काम कर सकती है। जैसे ऐल्डरों की नियुक्ति से पहले क्रेते और अन्य स्थानों में करती थी।

ऐल्डरों की तरह ही डीकनों के लिए भी आवश्यक है कि वे "एक ही पत्नी के पति" हो (1 तीमुथियुस 3:12)। स्पष्टतया कोई स्त्री डीकन बनने की योग्यता नहीं रखती है।

आयत 11 को पढ़कर कोई कहेगा कि यह "डीकनैस" अर्थात सेविका के लिए हो सकता है। परन्तु पूरा संदर्भ पढ़ने पर हमें पता चलता है कि यह कलीसिया के अगुओं की पत्नियों के धर्मी होने के लिए कहा गया है। इससे यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता है कि स्त्रियों को सेविका या डीकनैस बनाया जा सकता है। बेशक इस पद के बिना ही हर मसीही "मसीही" है। और हमारे लिए सेवा का कार्य करना अनिवार्य है। प्रभु यीशु मसीह की कलीसिया में स्त्री अन्य मसीही लोगों की सहायता करके और कलीसिया को बढ़ाकर बहुत सेवा कर सकती है। यह सेवा करने के लिए तो हम उनके साथ हैं।

परन्तु यदि कोई भी संस्था किसी स्त्री को प्रभु की कलीसिया की मण्डली पर अगुआई करने का अधिकार देकर उसे ऐल्डर या डीकन के पद पर ठहराती है तो यह सीधे-सीधे पवित्र शास्त्र के इन स्पष्ट वचनों का उल्लंघन होगा। यह परमेश्वर की आज्ञा में मनुष्य द्वारा जोड़ा जाना होगा, जिसकी सख्ती से मनाही की गई है (प्रकाशितवाक्य 22:18, 19, व्यवस्थाविवरण 4:2; नीतिवचन 30:6)।

तेरा नाम पवित्र माना जाए

ह्युगो मेकोर्ड

यीशु ने हमें समझाया कि प्रार्थना में परमेश्वर से मांगना चाहिए कि "तेरा नाम पवित्र माना जाए" (मत्ती 6:9)। क्या नाम में कुछ होता है? बहुत से लोग जोर लगाकर कहते है, "नहीं।" उन्हें इस बात का अहसास नहीं होता कि वे चेलों की प्रार्थना में पहली ही बिनती को रद्द कर रहे हैं। जो व्यक्ति नाम के महत्व पर विश्वास नहीं करता वह आत्मा से और समझ से "तेरा नाम पवित्र माना जाए" (मत्ती 6:9) की प्रार्थना नहीं कर सकता। यदि नाम का कोई महत्व नहीं है, तो पिता के नाम के पवित्र माने जाने या अपवित्र होने से कोई फर्क नहीं पड़ता।

बहुत से लोग विलियम शेक्सपियर को उद्धृत करते हुए कहते हैं, "नाम में क्या है? गुलाब को यदि कोई दूसरा नाम दे दिया जाए तो उसकी सुगंध तो मीठी ही रहेगी।" यह प्रमाणित करने के लिए कि धर्म में अच्छा क्या है जब कोई बाइबल को छोड़कर शेक्सपियर के पास जाता है, तो वह यह मान रहा होता है कि वह बाइबल से सहमत नहीं है। यदि गुलाब से इस उदाहरण से यह नियम बना लिया जाए कि एक नाम दूसरे की तरह ही अच्छा है, तो फिर तर्कसंगत रूप से बालजबूल का नाम भी पिता के नाम की तरह ही अच्छा है। आइए बाइबल की सच्चाइयों को प्रमाणित करने के लिए जीवन विज्ञान तथा अंग्रेजी साहित्य से निकलकर बाइबल में चलें। चेलों की प्रार्थना में पहली बिनती पर ध्यान देने पर, हम पाएंगे कि नाम का महत्व है। यीशु का भी यही मानना था और वह चाहता था कि उसके चेले भी ऐसा ही सोचें। वह चाहता था कि प्रार्थना करते समय उसके चेलों को परमेश्वर के नाम के महत्व की समझ होनी चाहिए।

एक पवित्र नाम

उस सर्वशक्तिमान का नाम बिना सोचे समझे नहीं लिया जाना चाहिए। यीशु चाहता है कि आप अपने मन की गहराइयों से चाहें कि मनुष्यों तथा स्वर्गदूतों में परमेश्वर का नाम बड़े सम्मान से लें। उसका नाम पवित्र होने के कारण, उसे अपने आप ही सबसे ऊपर और सबसे ऊंचा स्थान दिया जाता है, और उसका साधारण उपयोग नहीं किया जा सकता। ऐडम क्लार्क ने ध्यान दिलाया कि यूनानी शब्द का अनुवाद "पवित्र" दो विचारों "पृथ्वी" और "नहीं" से बनता है, इसलिए पिता का नाम "पृथ्वी का नहीं" है और उसे उसके पांवों की चौकी पर नहीं खींचना चाहिए।

"हल्लिलूयाह"

भीड़ का शोर, बहुत से झरनों की झर-झर और बिजली की भयंकर गड़गड़ाहट की तरह यूहन्ना पर एक अद्‌भुत शब्द प्रकट किया गया था। उसे

स्वर्गदूतों के "हल्लिलूयाह"। गीत को सुनने का सुअवसर प्राप्त हुआ था (प्रकाशितवाकय 19:1, 3,4, 6)।

जैसा कि मैं बहुत देर तक सोचता था, कि यहां महान शब्द समाधि में लीन होकर भावनात्मक पुकार नहीं बल्कि एक आज्ञा है, "प्रभु की महिमा करो।" हमारे पास प्रकाशितवाक्य 19 में यूहन्ना द्वारा चार बार सुना गया यह शब्द (हल्लेलूयाह) यूनानी रूप से आया है, जबकि इसका मूल इब्रानी है। दो शब्दों से बने, हलल और याह के योग से बने इस शब्द का अर्थ है "याहवेह की स्तुति करो।"

नाम का अनादर करना

बार-बार (लैव्यव्यवस्था 18:21, 19:12, 20:3, 21:6, 22:2), मूसा ने परमेश्वर का नाम व्यर्थ में लेने के विरूद्ध चेतावनी दी थी। ऐसा भी समय था जब इसे इतना पवित्र माना जाता था कि इस नाम का अपमान ओर दुरूपयोग करने के कारण एक व्यक्ति को गिरफ्तार करके उसे कैद में डाल दिया जाता था। जिसने भी उसके द्वारा की गई परमेश्वर की निंदा को सुना था, उसने उसे "डेरे से बाहर" ले जाते समय वहां उपस्थित होना था (लैव्यव्यवस्था 24:11-14) और हर एक गवाह को उस व्यक्ति के सिर पर हाथ रखकर चलना होता था जिससे यह प्रमाणित होता था कि उस बात को आरोपी ने कहा था तथा उसके बाद उसे पत्थर मारे जाते थे।

नाम लेना

परमेश्वर अपने नाम के किसी भी प्रकार के निंदात्मक इस्तेमाल के प्रति बहुत कठोर था और उसने पत्थर पर लिख दिया था कि उसका नाम किसी भी प्रकार से व्यर्थ न लिया जाए (निर्गमन 20:7)। उसने यह कभी भी नहीं चाहा था कि उसका नाम इतना पवित्र माना जाए कि मनुष्य उसे अपने होंठों पर न ला सकें। ऐसा अंधविश्वास बढ़ा और आज भी यहूदियों में पाया जाता है।

परमेश्वर ने आज्ञा दी थी कि जो भी नाम का दुरूपयोग करे उसे पत्थरवाह किया जाए (लैव्यव्यवस्था 24:16), और इस तीसरी आज्ञा को न समझ पाने के कारण, रब्बियों ने यह शिक्षा दी कि परमेश्वर का नाम आगे न बताया जाए, मुंह से न निकाला जाए, यह इतना पवित्र है कि पापी होंठों से उसका उच्चारण नहीं होना चाहिए। जबकि, परमेश्वर की चेतावनी केवल नाम का अपमान करने के विषय में थी न कि नाम लेने के बारे में। यदि नाम का उच्चारण होना चाहिए था, तो निश्चय ही बाइबल के समयों में बहुत से भले लोगों द्वारा इस नाम का इस्तेमाल न किया जाता परन्तु पुराने नियम में यह लगभग 6,873 बार मिलता है।

इब्रानी शब्द का संक्षिप्त रूप भजन 68:4 में मिलता है, "जो निर्जल देशों में सवार होकर चलता है, उसके लिए सड़क बनाओ, उसका नाम याह है, इसलिए तुम उसके सामने प्रफुल्लित हो।" इस संक्षिप्त शब्द का अर्थ यह नहीं है कि नाम

लिया ही नहीं जा सकता; बल्कि इससे सुझाव मिलता है कि इस नाम का इस्तेमाल बहुत होता था। इस्राएली लोग अपने आपको परमेश्वर के बहुत निकट मानते थे और उसका नाम ढिठाई से नहीं बल्कि खुलकर और बड़ी श्रद्धा से बिना हिचकिचाहट से लेते थे।

"भय" नाम

भजन 111:9 का उन लोगों द्वारा अनजाने में दुरुपयोग हुआ है, और वह यहां पर स्वयं परमेश्वर के लिए इस्तेमाल हुआ है। पुराने नियम में तीन सौ से अधिक बार मिलता है। इब्रानी शब्द "भय खाना" या "डरना।" लूत किसी नगर में रहने से डरता था फिर, मूसा ने आज्ञा दी कि, "तुम अपनी-अपनी माता और अपने-अपने पिता का भय मानना.." (लैव्यव्यवस्था 19:3)। इस्राएली लोग मूसा, यहोशू और परमेश्वर से डरते या उनका "भय रखते" थे (यहोशू 4:14, लैव्यव्यवस्था 19:14)। भजन संहिता 111:9 की यह महान आयत परमेश्वर के नाम को महिमा देती है। नाम आदर, भक्तिपूर्ण भय तथा डर के योग्य है। यही शब्द व्यवस्थाविवरण 28:58 में दो बार इस्तेमाल हुआ है। "...उस आदरणीय और भय योग्य नाम का, जो यहोवा तेरे परमेश्वर का है भय...." मानना।

कंपकपाते हुए सीने पर्वत पर बादलों में से प्रभु के उतरने, मूसा के पास गुजरने और नाम की "घोषणा" करने पर निश्चय ही एक गहरा सम्मान तथा पवित्र भय छा गया था : "....यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त और अति करूणामय और सत्य" (निर्गमन 34:6)।

फिर परमेश्वर ने सुन्दर और याजकों की विश्वप्रसिद्ध यह आशीष दी थी:

यहोवा तुझे आशीष दे और तेरी रक्षा करे;
यहोवा तुझ पर अपने मुख का प्रकाश चमकाए,
और तुझ पर अनुग्रह करे
यहोवा अपना मुख तेरी ओर करे,
और तुझे शांति दे
(गिनती 6:24-26)।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने अपना नाम उन धन्य शब्दों में तीन बार बिना सोचे समझे नहीं डाला, क्योंकि उसने बताया, "इस रीति वे मेरे नाम को इस्राएलियों पर रखें, और मैं उन्हें आशीष दिया करूंगा" (गिनती 6:27)।

हर कोने पर चमकते हुए करूबियों के साथ सुन्दर सोने के एक संदूक पर ही परमेश्वर अपने लोगों से मिलता था (निर्गमन 25:22)। एक से दूसरे स्थान पर ले जाते समय उस संदूक को न तो देखते थे और न ही उसे छुआ जाता था (गिनती 4:5, 6)। अनाधकारिक व्यक्ति जिन्होंने इसे चाहे "क्षण भर के लिए" ही देखा, वे मर गए थे (गिनती 4:21)। इसे पृथ्वी पर अतिपवित्र स्थान अर्थात परमपवित्र स्थान पर रखा गया था (निर्गमन 26:33, 40:21)। इस पवित्र संदूक

को बिल्कुल सही "उस नाम से अर्थात सेनाओं के यहोवा के नाम से जाना जाता" था जो करूबियों के मध्य विराजमान है (2 शमूएल 6:2)।

नाम की सामर्थ

परमेश्वर के नाम के सामर्थ की समझ प्रत्येक विश्वासी यहूदी को थी। युवक दाऊद सेनाओं के यहोवा के नाम में गोलियथ के सामने खड़ा होने से नहीं डरा। (1 शमूएल 17:45)। उसी युवक को, "इस्राएल का मधुर गायक" बनने के बाद प्रत्येक यहूदी को समझाने की प्रेरणा मिली थी :

याह की स्तुति करो
हे यहोवा के दासो स्तुति करो,
यहोवा के नाम की स्तुति करो।
यहोवा का नाम अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहा जाए।
उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक,
यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है

-भजन संहिता 113:1-3

परमेश्वर से प्रार्थना करना

जैसे दाऊद के समय में और यीशु द्वारा चेलों को प्रार्थना करना सिखाने के समय भी वह ईश्वरीय नाम धन्य और सर्वशक्ति का स्वामी था, आज भी जब केवल परमेश्वर के नाम में प्रार्थना की जाती है तो वह छत से ऊंची नहीं जा सकती। आप परमेश्वर के पास परमेश्वर के नाम से ही नहीं पहुंच सकते। पिता के अपने ही प्रबंध के अनुसार परमेश्वर तथा मनुष्यों में एक बिचवई बनाया गया है (1 तीमुथियुस 2:5)। उसकी अपनी ही शुभ इच्छा से, सब बुद्धि के स्वामी पिता ने सबको मसीह में इकट्ठे करने की योजना बनाई (इफिसियों 1:10)। परमेश्वर-मनुष्य की स्थिति इतनी महत्वपूर्ण है कि वह इतना अदभुत कथन कह पाया "मार्ग और सच्चाई और जीवन में ही हूं, बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंच सकता" (यूहन्ना 14:6)। अपनी गुप्त इच्छा के परामर्श से परमेश्वर किसी को, मसीह के बाहर उद्धार नहीं देता। यीशु भोर का चमकता हुआ तारा, दाऊद का मूल और वंश, अल्फा और ओमेगा, पहला और पिछला है (प्रकाशितवाक्य 22:13, 16)। वह कोने का सिरा है। "और किसी दूसरे के द्वारा उद्धार नहीं; क्योंकि स्वर्ग के नीचे मनुष्यों में दूसरा कोई नाम नहीं दिया गया, जिसके द्वारा हम उद्धार पा सकें" (प्रेरितों 4:12)।

परन्तु, मसीह ने हमेशा से ऐसा ऊंचा स्थान नहीं पाया था। पिन्तेकुस्त के दिन से पहले, उसकी विजयी मृत्यु के पश्चात उद्धार उसके नाम में नहीं था और न ही प्रार्थना उसके नाम में होती थी। उसने कहा था, "अब तक तुम ने मेरे नाम से कुछ नहीं मांगा" (यूहन्ना 16:24)। इसलिए, अपने चेलों को प्रार्थना करनी सिखाते हुए, उसने उन्हें अपने नाम से प्रार्थना करनी नहीं सिखाई। उस समय ऐसी

शिक्षा अनुपयुक्त होती। यह एक कारण है कि मत्ती 6:5-9 में चेलों की प्रार्थना आज पुरानी हो चुकी है। उस प्रार्थना के लिए जाने के बाद मानवीय इतिहास में सबसे बड़ी घटना घटी हैं अर्थात स्वर्ग और पृथ्वी का प्रबंध बदल चुका है। परमेश्वर ने यीशु को मुर्दों में से जिलाकर और अपने दाहिने हाथ बिठाकर महिमा दी है। उसने न केवल उसे वह नाम दिया है जो सब नामों से ऊंचा है, बल्कि उसने सारे अधिकार और सामर्थ और शक्तियां उसके अधीन कर दी है। मनुष्यों के साथ-साथ स्वर्गदूतों को भी उसकी आराधना करने की आज्ञा दी गई है (इफिसियों 1:20-23; इब्रानियों 1:6)।

आज जब मैं और आप प्रार्थना करते हैं, तो हमें न केवल "मैं जो हूं सो हूं" (निर्गमन 3:14) का नाम ही पवित्र मानना चाहिए, बल्कि उसके इकलौते पुत्र का नाम भी पवित्र मानना चाहिए। हम उसके पुत्र को महिमा दिए बिना जिसके हाथों में सब वस्तुएं दी गई हैं, पिता की महिमा नहीं कर सकते (मत्ती 11:27; यूहन्ना 5:23)। स्वर्ग में स्वर्गदूत भी कहते हैं, "कि वध किया हुमा मेम्ना ही सामर्थ, और धन और ज्ञान और शक्ति और आदर, और महिमा और धन्यवाद के योग्य है" (प्रकाशितवाक्य 5:12)।

महान परमेश्वर ने यह ठहरा दिया है कि जब जातियों में मन फिराने तथा पापों की क्षमा का प्रचार उसी के नाम से किया जाए (लूका 24:46, 47)। पिन्तेकुस्त के दिन यरूशलेम में, जीवते परमेश्वर की कलीसिया के जन्मस्थल और जन्मदिन पर स्वर्ग से प्रेरितों पर पवित्र आत्मा उतरा था। उस दिन हर व्यक्ति को मन फिराने और "यीशु मसीह के नाम से" (प्रेरितों 2:38) पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी गई थी। उस दिन से चेलों की प्रार्थना करने की आवश्यकता नहीं रही थी। उस दिन से, हर एक प्रार्थना यीशु के नाम से की जानी आवश्यक है (कुलुस्सियों 3:17); एक मसीही के जीवन में वचन या कार्य जो भी हो सब कुछ प्रभु यीशु के नाम से किया जाना आवश्यक है। परमेश्वर की इच्छा है कि हर एक जीभ उस नाम को अंगीकार कर ले जो सब नामों से ऊंचा है (फिलिप्पियों 2:9)। इससे पिता के नाम का अनादर नहीं होता है; इसके विपरीत, परमेश्वर ने ठहरा दिया है कि जो कोई पुत्र की महिमा नहीं करता वह पिता की महिमा भी नहीं करता, जिसे उसने भेजा है (यूहन्ना 5:23)। फिर तो, सचमुच जब आप यीशु के नाम को पवित्र जानते और उसके पीछे चलते हैं तो आप पिता के नाम को भी पवित्र मानते हैं।